शेखावाटी के स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं का योगदान

डॉ. प्रताप सिंह

सहायक आचार्य
मास्टर हजारी लाल शर्मा राजकीय महाविद्यालय, चिड़ावा (झुन्झुनूँ)

सारांश – भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में राजस्थान के शेखावाटी अंचल की महिलाओं की अहम् भूमिका रही। जिसमें उमा देवी अग्रवाल, जानकी देवी बजाज, अंजना देवी चौधरी, गीता देवी बजाज, सुमित्रा देवी खेतान, स्नेहलता गाडिया, गंगा देवी कानोड़िया, रमा देवी मुरारका, भगवानी देवी सेकसरिया, ज्ञानवती देवी लाठ, दुर्गावती देवी शर्मा, रामेश्वरी देवी शर्मा, उत्तमा देवी, विमला देवी शर्मा, म्होरी देवी पातुसरी आदि प्रमुख थी। महात्मा गाँधी, जमनालाल बजाज, मदनमोहन मालवीय, सुभाषचंद्र बोस की विचारधारा से प्रभावित थी।

किसान आन्दोलन, प्रजामण्डल आन्दोलन, हरिजनोद्धार, खादी, शिक्षा तथा समाज सुधार आदि क्षेत्रों में योगदान रहा। इस प्रकार शेखावाटी के स्वतंत्रता आन्दोलन की पृष्ठभूमि में अहम् भूमिका रही। वर्तमान में भी जुझारू प्रवृत्ति के कारण देश की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेती है।

मुख्य बिन्दु – शोषण, जनचेतना, रचनात्मक कार्य, उच्च आदर्श, राष्ट्रवाद।

प्रस्तावना – राजस्थान में अरावली पर्वत श्रेणी के उत्तरी–पश्चिमी भाग में अर्द्ध मरूस्थलीय भाग में जयपुर राज्य का एक भाग शेखावाटी प्रदेश आता है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से शेखाजी एवं उनके वंशजो द्वारा शासित क्षेत्र को शेखावाटी कहा जाता है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत अमरसरवाटी, झुन्झुनूँवाटी, उदयपुरवाटी आते हैं किन्तु इसकी भौगोलिक सीमाएँ झुन्झुनूँ तथा सीकर दो जिलों तक ही सीमित हैं। यद्यपि भाषा–वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बीकानेरवाटी का चुरू क्षेत्र भी शामिल हैं।[1]

शेखावाटी की भौगोलिक एवं प्राकृतिक परिस्थितियों में यहाँ के निवासियों का उद्यमी, मेहनती, कष्ट सहिष्णु एवं साहसी बनाया। यहाँ स्वभाव से ही वीर और निर्भीक होते हैं अपने इन्हीं गुणों के कारण पाश्चात्य विद्ववानों ने शेखावाटी क्षेत्र को भारत का स्कॉटलैण्ड कहा है। यहाँ की महिलाएं अपने शौर्य, त्याग और बलिदान के लिए सदैव अग्रणी रही है। पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर विभिन्न क्षेत्रों में संघर्ष किया। शेखावाटी की महिलाओं में जागृति का अंकुर 1925 ई. से प्रस्फुटित हुआ। जबकि उन्हें शिक्षा की ओर आकृष्ट किया गया। समाज सुधार कार्यक्रम में घूंघट हटाना, नव जागृति के लोकगीत बनाकर गाना, रूढ़िवादिता का त्याग और बलिदान के संस्कार आदि कार्यक्रम महिलाओं के लिए ही थे। शेखावाटी के अग्रिम पंक्ति के नेताओं की धर्मपत्नियाँ नेतृत्व करने लगी थी। उन्होंने रूढिग्रस्त संस्कारों को तिलांजलि देकर आर्य समाज के संस्कारों को स्वयं ग्रहण किया और समाज में उनका पूरा प्रचार किया। परम्परागत लोक गीतों की जगह नए गीतों को अपनाया।[2]

प्रमुख महिलाएँ – शेखावाटी की सभ्रांत एवं जागरूक महिलाओं में विशेष रूप से जानकी देवी धर्मपत्नी जमनालाल बजाज, सावित्री देवी धर्मपत्नी कमलनयन बजाज, उमादेवी धर्मपत्नी राजनारायण अग्रवाल, अंजना देवी धर्मपत्नी रामनारायण चौधरी, विमलादेवी धर्मपत्नी कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी, गीता देवी धर्मपत्नी गिरधारीलाल बजाज, सुमित्रा देवी धर्मपत्नी मदनलाल खेतान, स्नेहलता देवी धर्मपत्नी गिरधारीलाल गाडिया, गंगादेवी धर्मपत्नी भागीरथ कानोडिया, रमादेवी धर्मपत्नी बसन्तलाल मुरारका, भगवानी धर्मपत्नी सीताराम सेकसरिया, सुवट देवी धर्मपत्नी सेठ सोहनलाल दूगड, सुवृता देवी धर्मपत्नी रामनारायण रूईया, ज्ञानवती देवी धर्मपत्नी मोहनलाल लाठ, महादेवी धर्मपत्नी मोतीलाल केजरीवाल, इन्दुमती गोयनका धर्मपत्नी केसरदेव गोयनका, दुर्गावती देवी धर्मपत्नी पं. ताड़केश्वर शर्मा, उत्तमा देवी धर्मपत्नी ठाकुर देशराज, रमादेवी धर्मपत्नी

लादूराम जोशी, रामेश्वरी देवी धर्मपत्नी बन्शीधर शर्मा, किशोरी देवी धर्मपत्नी सरदार हरलालसिंह, किशोरी देवी धर्मपत्नी ख्यालीराम भामरवासी, रमाकोरी धर्मपत्नी हरलालसिंह बूरी मांडासी, फूलादेवी धर्मपत्नी चौधरी आशाराम मांडासी, रामकोरी धर्मपत्नी चौधरी घासीराम, बिमलादेवी धर्मपत्नी श्रीकृष्ण शर्मा चिडावा, सिणगारी देवी धर्मपत्नी लेखराम प्रतापपुरा, म्होरी देवी धर्मपत्नी सुखदेवसिंह पातुसरी, गोरांदेवी धर्मपत्नी गंगासिंह हनुमानपुरा, रामप्यारी कुमावास पुत्री चौधरी जीताराम, रामप्यारी शर्मा आदि प्रमुख थी।[3] जिन्होनें महिलाओं को संगठित किया और पुरूषों की भाँति किसी भी संघर्ष का मुकाबला करने को प्रेरित करती रहती थी। इनके आह्वान पर हजारों महिलाएँ इकट्ठी हो जाया करती थी। इन्होंने गाँव–गाँव और घर–घर ज्योति प्रज्ज्वलित की तथा नारी शिक्षा और हर कार्य में भागीदारी का पाठ पढाया। इनकी शेखावाटी के स्वतंत्रता आंदोलन में अहम भूमिका रही।

किसान आन्दोलन – सिहोट के ठाकुर भानसिंह ने 200 हथियारबन्द व्यक्तियों को लेकर सिहोट तथा सोतियाकाबास गाँव के किसानों पर हमला किया गया तथा किसानों की औरतों को बेरहमी से बेईज्जत और अपमानित कर पीटा गया। जागीरी क्षेत्र में यह पहला महिलाओं पर किया गया अमानुषिक अत्याचार था। इस घटना की शेखावाटी के किसानों में व्यापक प्रतिक्रिया हुई। स्थान–स्थान पर सभाएँ कर महिलाओं ने ठिकानों के विरूद्ध संघर्ष करने को कटिबद्ध हुई।[4] शेखावाटी अंचल में यह प्रथम अवसर था कि शेखावाटी की किसान महिलाएँ सामन्तशाही और जागीरदारों के विरूद्ध मैदान में आने को बैचेन थी।[5]

सिहोट के ठाकुर मानसिंह के अत्याचारों के खिलाफ शेखावाटी अंचल की महिलाओं ने 24 अप्रैल 1934 को कटराथल में एक महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन की संयोजिका उतमा देवी थी। इस सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती किशोरी देवी को बनाया गया।[6] इस सम्मेलन का समाचार सीकर ठिकाने की जानकारी में आया तो गाँव से महिलाओं की निकासी पर रोक लगा दी और धमकियाँ दी गई। कटराथल में इस सभा को न होने देने के लिए धारा–144 लागू कर दी।[7] किन्तु महिलाओं से इसे तोड़कर सभा में भाग लिया। इस सम्मेलन में श्रीमती रमा देवी, किशोरी देवी, फूलां देवी, दुर्गावत्ती शर्मा आदि प्रमुख थी। इन महिलाओं द्वारा शेखावाटी अंचल के विभिन्न क्षेत्रों से महिलाओं के जत्थों का नेतृत्व किया। कूदन, कोलिड़ा, माण्डासी, पचेरी, पातुसरी, सांगासी, पालड़ी, पलथाना, सोतियाकाबास, सिहोट, बोषाणा, बीबीपुर आदि अनेक गाँवों से महिलाओं के जत्थे के जत्थे सम्मेलन में शामिल हुए। ठाकुर देशराज की धर्मपत्नी उत्तमा देवी ने अपने जोशीले भाषण से उनमें जान फूंक दी और सम्मेलन में तय किया गया कि स्त्रियों को अपमानित करने वालों को कतई माफ नहीं किया जायेगा। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक ठिकानेदारों को ठिकाने नहीं लगा देगी वे चौन से नहीं बेठेगी तथा इस सम्मेलन में निम्नलिखित प्रस्ताव पास किये गए किसान स्त्रियों के साथ किए गए दुर्व्यवहार के लिए सिहोट के ठाकुर को अत्यन्त कठोर दण्ड दिया जाए। नए सिरे से शेखावाटी के सभी गाँवों का सर्वेक्षण तथा बन्दोबस्त का कार्य जयपुर सरकार के निरीक्षण में किया जाए। इस सम्मेलन से शेखावाटी कि किसानों में राजनैतिक चेतना का संचार हुआ। यह शेखावाटी की महिलाओं का प्रथम स्वतंत्र सम्मेलन था।[8]

सन् 1934 में पातुसरी ग्राम में ठिकानों की अत्याचार एवं लगान के विरोध में महिलाओं की मिटिंग हुई। जिसमें आस–पास के गाँव की हजारों महिलाओं ने भाग लिया। इसकी अध्यक्षता बनारसी देवी धर्मपत्नी सुखदेव सिंह ने की। इसी तरह की मिटिंगें शेखावाटी की हर ग्राम में होती थी। जिसमें लगान एवं लाल–बाग न देने का निर्णय लिया जाता था।[9]

21 जून 1934 को डूण्डलोद ठिकाने के जयसिंहपुरा गाँव में ठाकुर हरनाथसिंह के भाई ईश्वरसिंह ने 100 सशस्त्र सैनिकों के साथ किसानों पर लाठियों व भालों से हमला किया गया। भालों के वार से मोहरी व पन्ना नामक किसान स्त्रियाँ घायल हो गई। इस घटना से सम्पूर्ण शेखावाटी में तीव्र आक्रोश फैल गया। सम्पूर्ण जयपुर रियासत में जयसिंहपुरा शहीद दिवस मनाया गया। 21,22 व 23 जून को किसान पंचायत की घोषणा के अनुसार जगह–2 सार्वजनिक सभाएँ आयोजित कर इस घटना की भर्त्सना की गई। राज्य के पुलिस महानिरीक्षक एफ.एस.यंग को इस घटना की जाँच के लिए भेजा गया और मुकदमा बनवाया

गया। जयपुर रियासत में यह प्रथम मुकदमा था जिसमें किसानों के हत्यारों को सजा दिलाना सम्भव हो सका।[10]

खुडी तथा कुदन गाँव में सीकर ठिकानें द्वारा घरों को उजाड़ दिया गया ठिकानेदारों ने महिलाओं के जेवर तथा नकदी लूट लिए। जिन महिलाओं ने विरोध किया उन्हें बेईज्जत कर पीटा गया।[11] कैप्टन वेब ने गोठडा भूखरान, भैरूपुरा कटराथल, कलनऊ, जैटवा, नाऊ, राजसा, भूमास तथा कोरन गाँव में किसानों के घरों में लूटमार की और स्त्रियों के जेवर उतरवाए गए।[12] महिलाओं ने लगान तथा लाग–बाग का विरोध किया और बड़ी ही वीरता के साथ किसान आन्दोलन को सफल बनाया। अंजना देवी तथा रामदेवी जोशी ने सन् 1931 में बिजोलिया तथा बेगूं किसान आन्दोलन में महिलाओं का नेतृत्व किया। विमला देवी तथा गीता बजाज ने भी इन आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[13]

प्रजामण्डल आन्दोलन – सेठ जमनालाल बजाज की प्रेरणा से सन् 1931 में कपूरचन्द पाटनी द्वारा जयपुर प्रजामण्डल की स्थापना की गई।[14] सेठ जमनालाल बजाज की सलाह पर वनस्थली से हीरालाल शास्त्री को बुलाकर 9 नवम्बर 1936 को जयपुर प्रजामण्डल के संविधान में संशोधन करवाया। लेकिन जयपुर प्रजामण्डल का नियमित कार्य फरवरी 1937 में प्रारम्भ हुआ।[15] प्रजामण्डल का मुख्यालय जयपुर में रखा गया। उसका प्रमुख उद्देश्य महाराजा की छत्रछाया में संवैधानिक उपायों से जनता के प्रति उत्तरदायी शासन की स्थापना करना था। साथ ही साथ जनता के आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार करने का प्रयास करना था।[16]

सन् 1939 में जयपुर प्रजामण्डल सत्याग्रह आन्दोलन में शेखावाटी की महिलाओं की अहम भूमिका रही। जिनमें प्रमुख दुर्गादत्त देवी शर्मा, सुमित्रा देवी खेतान, अनुसूईया देवी, सिणगारी देवी, मोहरी देवी, रामकोरी देवी, भारती देवी, अंजना देवी, विमला देवी आदि महिलाएँ रही। शेखावाटी से दुर्गादत्तदेवी शर्मा के नेतृत्व में 18 मार्च 1939 को महिलाओं का प्रथम सत्याग्रही जत्था जयपुर पहुँचा। इनमें भाग लेने वाली प्रत्येक महिला सत्याग्रही को चार–चार माह की सजा दी गई तथा उन्हें जयपुर के केन्द्रीय कारागार में रखा गया।[17] महिलाओं का द्वितीय सत्याग्रही जत्था श्रीमती किशोरी देवी के नेतृत्व में जयपुर पहुँचा। इनमें झुन्झुनूँ क्षेत्र की किसान महिलाएँ अधिक थी। इन महिला सत्याग्रहियों को गिरफ्तार नही किया गया क्योंकि इससे पहले ही सरकार से प्रजामण्डल का समझौता हो जाने के कारण सत्याग्रह आन्दोलन 19 मार्च 1939 को ही स्थगित कर दिया।[18]

रींगस के खादी आश्रम की 22 महिलाओं के एक जत्थे ने जयपुर जाकर सत्याग्रह किया और गिरफ्तारी दी। उनमें प्रत्येक सत्याग्रही को 4 से 6 माह की सजा दी गई और उन्हें भी जयपुर केन्द्रीय कारागार में रखा गया।[19] रामगढ़ की सुमित्रा देवी खेतान ने महिलाओं के जत्थे का नेतृत्व किया। उनकी गोद में 2 माह का बालक दूसरे हाथ में तिरंगा झण्डा लिये हुए केसरिया साड़ी पहने जौहरी बाजार में जत्थे का नेतृत्व करने के कारण पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उनके साथ विद्या देवी, पदमा देवी, शारदा देवी, सुशिला देवी गोयल तथा रमादेवी देशपाण्डे भी । थी। इन्हें चार माह की सजा हुई। ये सभी चरखा संघ की कार्यकर्ता थी।[20] इसी समय 20 जुलाई 1939 कुमावास गाँव की रामप्यारी ने हैदराबाद में आर्य समाज के सत्याग्रह का नेतृत्व किया। जिसे गिरफ्तार कर कारावास भेज दिया।[21] गोविन्दगढ़ चरखा संघ में कार्यरत शेखावाटी की महिलाओं ने जयपुर सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया और गिरफ्तारियाँ भी दी।[22]

खादी – शेखावाटी में खादी कार्यक्रमों को बढ़ावा देने वाली महिलाओं में सुमित्रा देवी खेतान, शिवदेवी सिंघल, सुवृता देवी रूईया, स्नेहलता गाडिया, रमादेवी जोशी, रामेश्वरी देवी, दुर्गावती देवी, सिणगारी देवी, किशोरी देवी आदि प्रमुख थी। सन् 1921 में रमा देवी जोशी ने खादी वस्त्र पहन कर अपने पति लादूराम जोशी के साथ राजस्थान सेवा संघ में कार्य करने लगी।[23] दुर्गावती देवी ने सन् 1921 में खादी पहनकर स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया।[24] रामकोरी देवी गहने तथा घूंघट उतारकर खादी की साडी पहनना आरम्भ किया।[25] रामगढ की सुवृता देवी रूईया के नेतृत्व में स्थानीय जन सहयोग से खादी का कार्य आरम्भ

किया।[26] सुमित्रा देवी खेतान ने अपने पति मदनलाल खेतान की प्रेरणा से चरखा संघ में कार्य किया।[27] रींगस की शिवदेवी सिंघल ने गहने तथा घूंघट प्रथा का त्यागकर खादी वस्त्र पहनना आरम्भ किया और अपने पति रामेश्वर अग्रवाल के साथ सार्वजनिक कार्यो में भाग लेती थी।[28] झुंझुनू में स्नेहलता गाडिया ने सामाजिक संस्था के रूप में खादी आश्रम की स्थापना की जिसके माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को रोजगार के अवसर मिले।[29]

हरिजनोद्वार – महात्मा गाँधी की प्रेरणा से शेखावाटी में हरिजनोंद्वार के कार्य किए गए। यहाँ की महिलाओं में प्रमुख गंगादेवी कानोड़िया, सुवट कँवर दूगड़, अनुसूईया देवी बगड़का, गीता बजाज, अंजना देवी चौधरी, रामप्यारी शर्मा आदि ने हरिजनोंद्वार कार्यकर्मों को बढ़ावा दिया। गंगादेवी कानोड़िया की प्रेरणा से सेठ भागीरथ कानोड़िया ने सन् 1935 में मुकुन्दगढ़ में हरिजन सेवक संघ की स्थापना की। इन्होंने मोतीलाल बलाई के घर हरिजन पाठशाला खोली जो शेखावाटी अंचल की प्रथम हरिजन पाठशाला थी।[30] शारदा सदन छात्रावास हरिजन बालकों के प्रवेश के लिए सदैव खोल दिया। अनुसूईया देवी बगड़का ने सेठ पीरामल द्वारा बगड कस्बें में हरिजन पाठशाला खुलवाने में अहम भूमिका निभाई। यह शेखावाटी अंचल की दूसरी हरिजन पाठशाला थी।[31] श्रीमती रामप्यारी शर्मा को वर्धा में महात्मा गाँधी ने हरिजनोंद्वार के लिए हरिजन परिवारों को शिक्षित करने को प्रेरित किया। इन्होंने सर्वप्रथम अपने खोराबीसल गाँव में हरिजन पाठशाला आरम्भ की।[32] काशीकाबास के गिरधारीलाल बजाज की धर्मपत्नी गीता बजाज की शिक्षा के साथ हरिजन कार्यो में विशेष रूचि रही।[33] अंजना देवी चौधरी ने सन् 1934 से 1936 तक नारेली आश्रम में रहकर हरिजन सेवा के कार्य किए।[34]

शिक्षा – शेखावाटी में शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की अहम भूमिका रही। रमादेवी जोशी, उत्तमा देवी, किशोरी देवी, रामकोरी देवी, रामप्यारी शर्मा, गीता बजाज, स्नेहलता गाडिया, अनुसूईया देवी बगड़का, सिणगारी देवी आदि ने शिक्षा कार्यो को बढ़ावा दिया। सर्वप्रथम सन् 1925 में दूलड़ो का बास तथा कुहाड़वास में पाठशालाएँ खोली गई। लड़कों के साथ–साथ लड़कियों को भी पाठशालाओं में भेजने की जागृति पैदा की गई।[35] रमा देवी जोशी विधवा होने के पश्चात पढ़ना आरम्भ किया और पूरी शिक्षा ग्रहण कर सीकर में अध्यापिका बन गई। इन्होंने नारी शिक्षा द्वारा स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाया।[36] किशोरी देवी ने सन् 1940 ई. के पश्चात झुन्झुनूँ के विद्यार्थी भवन तथा हनुमानपुरा गाँव की छात्राओं को पढ़ाने का प्रबन्ध करवाया। और स्वयं देखभाल करती थी।[37] मांडासी गाँव की रामकोरी देवी ने शेखावाटी में महिला शिक्षा प्रसार के लिए कार्य किए।[38] जयपुर के खोराबीसल गाँव की श्रीमती रामप्यारी शर्मा ने जालन्धर में शिक्षा प्राप्त कर वर्धा में अध्यापन कार्य किया। सेठ जमनालाल बजाज की प्रेरणा से शेखावाटी के झुन्झुनूँ में अध्यापिका बनकर आई। राजपुताना शिक्षामण्डल की सेवा में कार्य करते हुए स्त्री शिक्षा पर बल दिया।[39] स्नेहलता गाडिया ने झुन्झुनूँ में बाल विद्यालय तथा बालचर संस्थाओं की स्थापना की।[40] इन महिलाओं ने शिक्षा के द्वारा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का समग्र चरित्र निर्माण किया। शिक्षा के स्वरूप को प्रजातान्त्रिक मूल्यों के अनुरूप बनाया।

समाज सुधार – सन् 1931 में सेठ देवीबक्स सर्राफ के नेतृत्व मे मण्डावा में आर्य समाज के जलसे में हजारों महिलाओं ने भाग लिया। समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने का संकल्प लिया।[41] 1938 में सिणगारी देवी के नेतृत्व में झुन्झुनूँ में महिला जागरण सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें सामाजिक सुधारों के कार्यों पर बल दिया।[42] समाज में पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, मृतक भोज (मौसर), बाल विवाह आदि का विरोध किया गया। विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया गया। सन् 1921 में रमा देवी जोशी ने विधवा विवाह किया था। यह शेखावाटी में ही नही अपितु राजस्थान की महिलाओं को नई राह दिखाई।[43] स्नेहलता गाडिया वणिक समाज की प्रथम महिला थी। जिसने सन् 1945 में पर्दा एवं दहेज रहित विवाह किया था।[44] अंजना देवी चौधरी ने समाज में महिलाओं मे जागृति पैदा करने के लिए अजमेर से नीम का थाना तक समाचार–पत्र, सूचनाएँ, पोस्टर्स आदि बाँटने का कार्य करती थी।[45]

निष्कर्षत शेखावाटी के स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं की अहम् भूमिका रही। इनके द्वारा किये गये रचनात्मक कार्यों से शेखावाटी तथा आसपास के क्षेत्रों के लोगों में नवीन चेतना एवं राष्ट्रवाद की भावना जागृत हुई। सामाजिक चेतना का विकास हुआ। समाज के समस्त अधिकार देने के प्रयास किए। जिससे जीवन को उच्च आदर्शता मिली। इन्होंने सामाजिक मुद्धों के प्रति संवेदनशीलता तथा प्रतिबद्धता को प्रदर्शित कर सामाजिक परिर्वतन की प्रक्रिया को गति प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

सन्दर्भ :–

1. शेखावत, सुरजनसिंह (1989) : शेखावाटी प्रदेश का प्राचीन इतिहास, झुन्झुनूँ, श्री शार्दूल एज्यूकेशन ट्रस्ट, पृ.सं. i-viii
2. शाह, प्रमोद (1994) : मंचिका अधिवेशन विशेषांक, दिल्ली, अखिल भारतीय युवा मंच, पृ.सं. शेखावाटी के स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका।
3. जालान, नन्दकिशोर (1985) : शेखावाटी नवलिका, खण्ड–1, कलकत्ता, श्री नवलगढ़ विधालय कमेटी, पृ.सं. 132
4. सिह, मोहन (1990) : शेखावाटी में स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, झुन्झुनूँ, कविता प्रकाशन, पृ. सं. 47
5. ठाकुर देशराज (1949) : रियासती भारत के जाट जनसेवक (अप्रकाशित), भरतपुर, पृ.सं. 246
6. वही, पृ.सं. 237
7. वही, पृ.सं. 44
8. सहीराम (1996) : एक अधूरी क्रान्ति, जयपुर, वीर तेजा प्रकाशन, पृ.सं. 184
9. ठाकुर देशराज (1961) : शेखावाटी के जन जागरण एवं किसान संघर्ष के चार दशक, जयपुर, राजस्थान प्रिन्टर्स, पृ.सं. 19
10. शर्मा, डॉ. रामगोपाल (2003) : राजस्थान में प्रजामण्डल आन्दोलन, भाग–3, जयपुर, राजस्थान संघर्ष जयन्ती समारोह समिति, पृ.सं. 198
11. वही, पृ.सं. 205
12. सहीराम (1996) : वही, पृ.सं. 210
13. सिह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 157
14. कोठारी, मनोहर (2003) : भारत के स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान, जयपुर, राजस्थान स्वर्ण जयन्ती प्रकाशन समिति, पृ.सं. 410
15. पांडे, डॉ. राम (1994) : पीपुल्स मुवमेंट इन राजस्थान, जयपुर, शोधक, पृ.सं. 48
16. जयपुर प्रजामण्डल–बस्ता संख्या 7, फाईल नं. 6, पृ.सं. 230, रा.रा.अ., बीकानेर
17. कोठारी, मनोहर (2003) : वही, पृ.सं. 419
18. सिंह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 277
19. कोठारी, मनोहर (2003) : वही, पृ.सं. 419
20. सिंह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 282
21. वही, पृ.सं. 283
22. कोठारी, मनोहर (2003) : वही, पृ.सं. 420
23. सिंह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 271
24. जोशी, सुमनेश (1973) : राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी, जयपुर, ग्रन्थागार, पृ.सं. 649
25. वही, पृ.सं. 653

26. जैन, जवाहिरमल (1986) : श्री रामेश्वर अग्रवाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व, जयपुर, राजस्थान खादी ग्रामाद्योग संस्था, पृ.सं. 9
27. सिंह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 281
28. जैन, जवाहिरमल (1986) : वही, पृ.सं. 6–8
29. सिंह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 285
30. वर्मा, मदनलाल (2001) : शेखावाटी अंचल–555 वर्ष, जयपुर, शेखावाटी अंचल, पृ.सं. 46
31. सिंह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 275
32. जोशी, सुमनेश (1973) : वही, पृ.सं. 622
33. गुप्त, कोचर, झालानी (2002) : राजस्थान के प्रकाश स्तम्भ, खण्ड–4, जयपुर, राजस्थान स्वर्ण जयन्ती समारोह समिति, पृ.सं. 141
34. वही, पृ.सं. 202
35. वर्मा, मदनलाल (2001) : वही, पृ.स. 63
36. सिंह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 271
37. वही, पृ.सं. 277
38. वही, पृ.सं. 279
39. जोशी, सुमनेश (1973) : वही, पृ.सं. 622
40. सिंह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 285
41. वही, पृ.सं. 282
42. वही, पृ.सं. 285
43. जोशी, रामस्वरूप (2003) : राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर पुरोधा–लादूराम जोशी, जयपुर, राजस्थान स्वर्ण जयन्ती प्रकाशन समिति, पृ.सं. 44.
44. सिंह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 285
45. सिंह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 273